ओ जगदम्बा

(श्री श्याम शास्त्रि विरचित)

रागम्: आनन्दभैरवि ताळम्: आदि

पल्लवि

ओ जगदम्बा नन्नु अम्बा नीवु जवमुन ब्रोवु अम्बा

अनुपल्लवि

ई जगति गतियै जनुलकु मरि तेजमुन राजविनुतयौ
राजमुखि सरोजनयन सुगुण राजराजित कामाक्षि

चरणम्

कन्नतल्लि नादुचेन्तनिन्त कन्नड सलुपग तगुना

निन्नुने नम्मियुन्नवाडुगदा नन्नोकनि ब्रोचुटकरुदा

अन्निभुवनम्बुलु गाचेवु प्रसन्नमूर्ति अन्नपूर्णवरदा
विन्नपम्बु विन्नपिञ्चि सन्निधि विपन्नभय विमोचन धौरेय ॥ १ ॥

जालमेल शैलबाल ताळजालनु जननी निन्नुविना

पालनार्थमुग वेरे दैवमुल लोलमतियै नम्मितिना

नीलनुत शीलमुनेच्चट नैनगान गानलोल हृदय
नीलकण्ठराणि निन्नु नम्मितिनि निजम्बुगबल्केदि दयचेसि ॥ २ ॥

चञ्चलात्मुडेनु येमि पूर्वसञ्चितमुल सलिपितिनो

काञ्चिकामाक्षि निनु निन्नुपोडगाञ्चितिनि शरणु शरणु नी-

विञ्जुका चञ्चलगति ना देसनुञ्चवम्मा श्यामकृष्णविनुत
मञ्चिकीर्ति निच्चुनट्टि देवि मन्निञ्चि नादपराधमुल सहिञ्चि ॥ ३ ॥

स्वर साहित्यम्

वरसितगिरि निलयुनि प्रिय प्रणयिनि पराशक्ति मनविनि विनुमा
मरियादलेरुगनि दुष्प्रभुल कोरि विनुतिम्पग वरम्बोसगु

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇